मैं ज़िन्दगी का साथ निभाता चला गया ...

डा विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
vjsukhwani@gmail.com

दोस्तों, क्या आप यकीन करेंगे कि 'तेरा फूलों जैसा रंग तेरे शीशे जैसे अंग '(कभी कभी) और 'जानेमन तुम कमाल करती हो '(त्रिशूल) जैसे शोख चंचल रोमांटिक गानों से लेकर 'मैं ज़िन्दगी का साथ निभाता चला गया' (हम दोनों), 'लागा चुनरी में दाग '(दिल ही तो है), 'वक़्त के दिन और रात' (वक़्त) और 'मन रे तु काहे न धीर धरे '(चित्रलेखा) जैसे दार्शनिक गीत और 'बाबुल की दुआएं लेती जा '(नीलकमल), 'जा री बहिना जा तू अपने घर जा '(त्रिशूल) जैसे मार्मिक विदाई गीत और 'ये दुनिया अगर मिल भी जाये तो क्या है' (प्यासा), 'औरत ने जन्म दिया मर्दों को मर्दों ने उसे बाजार दिया '(साधना) जैसे क्रान्तिकारी गीत एक ही कलमकार की कलम से उपजे हैं।

जी हाँ ये सच है और वो कलमकार हैं 'अब्दुल हयी' मुमकिन ही आपने ये नाम न सुना हो तो मैं आपकी मुश्किल आसान कर देता हूं, ये हैं वो महान शायर व गीतकार जिन्हें आप और हम 'साहिर लुधियानवी' के नाम से जानते हैं। साहिर लुधियानवी एक बड़े शायर थे. 'तल्ख़ियाँ', 'आओ कि कोई ख़्वाब बुनें', 'परछाइयाँ' आदि उनके प्रसिद्ध काव्य संग्रह हैं, उनका पहला काव्य-संग्रह 'तल्ख़ियाँ' प्रकाशित होते ही बड़ा लोकप्रिय हो गया. विभाजन के बाद वे दिल्ली और फिर मुंबई पहुँचे, जहाँ फ़िल्मों ने उन्हें नयी पहचान दी और उन्होंने भी फ़िल्मी गीतों को एक नया स्वरूप दिया. साहिर हिंदी सिनेमा के उन चंद गीतकारों में से हैं जिन्होंने फ़िल्मी गीतों को दर्शन, विचार, मानवीय संवेदना और सामाजिक चेतना का नया रूप दिया. उनकी लेखनी में बग़ावत और मुहब्बत दोनों रंग शामिल थे और वे समाज की विडंबनाओं पर कड़ा प्रहार करते थे. साहिर सिर्फ़ गीतकार नहीं थे, वे एक बड़ी दार्शनिक शख्सियत थे, जिन्होंने फ़िल्मी गीतों जैसे मनोरंजन के माध्यम को समाज में राष्ट्रीयता, इंसानियत और सामाजिक न्याय का संदेश देने की ताक़त में बदला.

उनके गीतों में सामाजिक सरोकार स्पष्ट दिखाई पड़ता है समाज में व्याप्त गरीबी, अन्याय, साम्प्रदायिकता, इन सब पर उन्होंने बेलाग लिखा.उनके प्यार मुहब्बत से भरे रोमांटिक गीत भी गहरी भावनात्मक गहराई लिये हुए हैं, उनके गीतों की भाषा सरल लेकिन असरदार है जो उर्दू की नफ़ासत और हिंदी की सहजता का सुंदर संगम है.

वर्ष 1949 में फ़िल्म 'आजादी की राह पर' के लिये उन्होंने पहली बार गीत लिखे किन्तु प्रसिद्धि उन्हें फ़िल्म 'नौजवान' से मिली जिसका गीत 'ठंडी हवाएं लहरा के आएं' काफ़ी मक़बूल हुआ.1950 के दशक में साहिर धीरे-धीरे हिंदी फ़िल्मी गीतों के सबसे प्रतिष्ठित नाम बन गए. उनकी खासियत ये थी कि वे परंपरा के विपरीत, धुन

पर गीत नहीं लिखते थे, धुन हमेशा उनके लिखे हुए शब्दों पर बनाई जाती थी। उन्होंने अपने समय के सभी मुख्य संगीतकारों के साथ काम किया. एस. डी. बर्मन के साथ उनकी जोड़ी हिंदी फ़िल्म संगीत की सबसे यादगार जोड़ियों में गिनी जाती है. फिल्म 'नौजवान', 'प्यासा', 'बाजी', 'जाल', 'मुनीमजी' और 'टैक्सी ड्राइवर' आदि फिल्मों ने इस जोड़ी को अमर कर दिया.

रोशन के साथ भी उनकी जोड़ी फ़िल्म 'बरसात की रात', 'चित्रलेखा', 'बहू बेगम', 'ताज़महल' आदि में काफ़ी हिट रही. संगीतकार रवि के साथ साहिर की जोड़ी ने कई दिल छू लेने वाले गीत दिए, 'चलो एक बार फिर से अजनबी बन जायें' (गुमराह), 'आप आये तो ख्याले दिले नाशाद आया' (गुमराह), 'ए मेरी जोहराजबी' (वक़्त), 'किसी पत्थर की मूरत से' (हमराज़) आदि.

संगीतकार जयदेव के साथ भी उन्होंने 'अल्लाह तेरो नाम ईश्वर तेरो नाम' (हम दोनो), 'कभी खुद पे,कभी हालात पे रोना आया' (हम दोनों) जैसे कुछ बहुत उम्दा गहन और संवेदनशील गीतों का सृजन किया. इसी प्रकार ख़य्याम के साथ उनकी शायरी और संगीत का अनोखा संगम, 'तुम अपना रंजो-गम,अपनी परेशानी' (शगुन) 'कभी कभी मेरे दिल में' (कभी कभी), 'आपकी महकी हुई ज़ुल्फ को कहते हैं' (त्रिशूल) में दिखाई देता है. साहिर ने फ़िल्मी गीतों में सभी विषयों पर बेबाक लिखा है. उनके गीत सामाजिक हालात पर सटीक प्रहार करते हैं 'ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है', जीवन की निस्सारता को बयां करता है, 'जिन्हें नाज़ है हिंद पर वो कहाँ हैं' समाज में फैली घोर असमानता और अन्याय पर कटाक्ष है. इसी प्रकार उनका गीत 'ना हिन्दू बनेगा ना मुसलमान बनेगा इंसान की औलाद है इंसान बनेगा' (धूल का फूल) सांप्रदायिक एकता का सन्देश देता है.

'साथी हाथ बढ़ाना', 'ये देश है वीर जवानो का', 'चीनो अरब हमारा', 'आसमान पे है खुदा और ज़मीं पे हम' आदि उनके कुछ अन्य महान गीत हैं. साहिर ने फ़िल्मी गीतों को मनोरंजन भर नहीं रहने दिया, बल्कि उन्हें साहित्य की ऊँचाई और गहरा मानवीय चिंतन प्रदान किया. इनमें इंसानियत, मोहब्बत, युद्ध-विरोध और समाज में समानता की आवाज़ सुनाई देती है,

साहिर की लेखनी की विशेषता है सरल शब्द मगर गहरा प्रभाव और गीतों में नज़्मों जैसी संवेदना. साहिर मूलत: नज़्मनिगार थे; उनके फ़िल्मी गीत भी उनकी नज़्मों की तरह ही बहते हैं.

गुलज़ार साहब उनके बारे में कहते हैं, 'साहिर साहब ने फिल्मी दुनिया को नहीं अपनाया था.फिल्मी दुनिया ने उन्हें अपनाया था.जहां तमाम दूसरे शायर शायरी अलग व फिल्मी गीत अलग स्टाइल में लिखते थे, वहां साहिर लुधियानवी इकलौते ऐसे शायर थे जो जैसे लिटरेचर लिखते थे वैसे ही फिल्मी गीत भी लिखा करते थे.ये उनकी तमाम खूबियों में से एक थी'. साहिर पहले गीतकार थे जिन्होंने रॉयल्टी और गीतकार के नाम के सम्मान के लिए लड़ाई लड़ी. उन्होंने रेडियो पर गाने से पहले गीतकार का नाम बताने पर जोर दिया, और उनके प्रयासों से ही यह प्रथा शुरू हुई, उससे पहले सिर्फ गायक व संगीतकार का ही नाम प्रसारित किया जाता था.उन्हें दो बार फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार प्राप्त हुआ और भारत सरकार ने भी पद्मश्री से सम्मानित किया.

साहिर लुधियानवी सिर्फ़ फ़िल्मी गीतकार नहीं थे, वे समाज की अंतरात्मा और अवाम की आवाज़ थे.उनके कालजयी गीत सिर्फ बीते हुए समय की यादें नहीं हैं, बल्कि आज भी हमारे समाज की सच्चाइयों का आईना हैं.आज के लिए बस इतना ही,अगले हफ्ते फिर मुलाक़ात होगी, तब तक साहिर साहब का ये प्रेरणादायी गीत सुनिए और सदा खुश रहिये, मस्त रहिये,

मैं ज़िन्दगी का साथ निभाता चला गया
हर फ़िक्र को धुएं में उड़ाता चला गया,
बर्बादीयों का सोग मनाना फ़िज़ूल था
बर्बादीयों का जश्न मनाता चला गया

रकुल ने कहा, 'बहुत कम फिल्में होती हैं, जहां एक्ट्रेसेस को ऐसा रोल मिलता है. मुझे उम्मीद है कि भविष्य में भी मुझे ऐसे ही किरदार मिलते रहें.' फिल्म में अजय देवगन के साथ उनके रोमांटिक सीन पर रकुल ने कहा कि उम्र में अंतर होने के बावजूद सेट पर सब कुछ प्रोफेशनल और सहज था.

अजय देवगन संग रोमांस चुनौतीपूर्ण : रकुल

रकुल प्रीत सिंह ने हाल ही में फिल्म दे दे प्यार दे 2 की सफलता और अपने अनुभव के बारे में बात की. उन्होंने बताया कि फिल्म में उन्हें जो किरदार मिला, वह बेहद संतोषजनक और चुनौतीपूर्ण था. रकुल ने कहा, 'बहुत कम फिल्में होती हैं, जहां एक्ट्रेसेस को ऐसा रोल मिलता है. मुझे उम्मीद है कि भविष्य में भी मुझे ऐसे ही किरदार मिलते रहें.'

फिल्म में अजय देवगन के साथ उनके रोमांटिक सीन पर रकुल ने कहा कि उम्र में अंतर होने के बावजूद सेट पर सब कुछ प्रोफेशनल और सहज था. उन्होंने बताया कि सेट पर हंसी-मजाक और हलचल रहती है, लेकिन जैसे ही कैमरा ऑन होता है, अंदर की भावनाओं की स्विच तुरंत ऑन हो जाती है.

रकुल ने अजय देवगन की तारीफ करते हुए कहा, 'अजय सर हमेशा सर रहेंगे. उनके लिए मेरा रिस्पेक्ट हमेशा रहेगा. उनका अनुभव और प्रोफेशनलिज्म मुझे बहुत कुछ सिखाता है.'

रकुल ने फिल्म में एज गैप और रिलेशनशिप को लेकर भी खुलकर बात की. उनका कहना है कि सिनेमा का उद्देश्य दर्शकों को एंटरटेन करना है, समाज का आईना नहीं. उन्होंने बताया कि फिल्म में दर्शाया गया एज गैप और उसके असर को बहुत सोच-समझकर पेश किया गया है, ताकि कहानी और किरदार दोनों प्रामाणिक और असरदार दिखें. इसके अलावा, फिल्म के सीक्वल को बनने में 6 साल का समय क्यों लगा, इसके बारे में भी रकुल ने खुलासा किया.

उन्होंने बताया कि कोविड के कारण शूटिंग और ट्रैवल मुश्किल हो गया था, और टीम ने यह सुनिश्चित किया कि स्क्रिप्ट अच्छी होने के बाद ही फिल्म बनाई जाए.

गोल्डन ग्लोब्स होराइजन अवॉर्ड से सम्मानित हुई आलिया

बॉलीवुड की चमकती हुई स्टार आलिया भट्ट को हाल ही में सऊदी अरब के जेद्दा में आयोजित रेड सी इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में गोल्डन ग्लोब्स होराइजन अवॉर्ड से सम्मानित किया गया. इस अवॉर्ड समारोह में आलिया भट्ट को ट्यूनीशियाई अभिनेत्री हेंड सबरी के साथ सम्मानित किया गया, जिन्हें उमर शरीफ अवॉर्ड से नवाजा गया.

इस अवसर पर आलिया भट्ट ने खुशी और गर्व व्यक्त करते हुए कहा कि, 'गोल्डन ग्लोब्स द्वारा सम्मानित होना मेरे लिए गर्व की बात है. यह सम्मान मुझे दुनिया भर में फिल्म और टेलीविजन में बदलाव ला रही महत्वाकांक्षी कलाकारों और महिलाओं की नई पीढ़ी की ओर से बोलने का मौका देता है.

ऐसे समय में जब वैश्विक स्तर पर प्रभावशाली कहानियों को साझा करने के लिए लोग एकजुट हो रहे हैं, यह सम्मान और भी महत्वपूर्ण बन जाता है.' आलिया भट्ट की उपलब्धि न सिर्फ उनके करियर के लिए बल्कि भारतीय फिल्म इंडस्ट्री के लिए भी गौरव की बात है. उन्होंने अब तक कई बेहतरीन और बहुचर्चित फिल्मों में काम किया है और हमेशा अपने अभिनय से दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया है.

आगामी परियोजनाओं की बात करें तो आलिया भट्ट यशराज फिल्म्स के स्पाई यूनिवर्स की फिल्म 'अल्फा' में नजर आएंगी. इस फिल्म में उनके साथ शरवरी वाघ, बॉबी देओल और अनिल कपूर प्रमुख भूमिकाओं में होंगे.

इसके अलावा, आलिया संजय लीला भंसाली की महत्वाकांक्षी फिल्म 'लव एंड वॉर' में भी काम कर रही हैं, जिसमें उनके साथ रणबीर कपूर और विक्की कौशल जैसे कलाकार भी होंगे. फिल्म इंडस्ट्री और फैंस के लिए यह समय बेहद रोमांचक है, क्योंकि आलिया भट्ट की नई फिल्में उनकी बहुमुखी प्रतिभा और अभिनय कौशल को फिर से साबित करेंगी.

गोल्डन ग्लोब्स होराइजन अवॉर्ड उनकी अंतरराष्ट्रीय पहचान को और मजबूती प्रदान करता है और यह संकेत है कि भारतीय कलाकार अब वैश्विक मंच पर भी अपनी अलग पहचान बना रहे हैं.

'अल्फा' और 'लव एंड वॉर' आलिया भट्ट अभिनीत आगामी हिंदी फ़िल्में हैं. 'अल्फा' 2026 में रिलीज़ होने वाली एक हिंदी एक्शन-थ्रिलर फ़िल्म है जिसमें आलिया भट्ट और शरवरी मुख्य भूमिका में हैं. इसकी रिलीज़ की तारीख 17 अप्रैल, 2026 है.

'टेढ़ी हैं पर मेरी हैं' : एक हास्य पूर्ण कहानी

रेमो डिसूज़ा अपनी आगामी फिल्म 'टेढ़ी हैं पर मेरी हैं' के साथ एक ताज़ा दृष्टिकोण पेश करने के लिए तैयार हैं. यह एक विचित्र, हास्यपूर्ण कहानी है, जिसमें परफेक्शन पीछे छूट जाता है और प्यार में पागलपन, रास्ता दिखाता है. इस प्रोजेक्ट में शामिल हो रहे हैं अभिनेता जितेंद्र कुमार, जो अपनी सहज और दिल से जुड़ी भूमिकाओं के लिए मशहूर हैं. महवश फिल्म में जितेंद्र कुमार के साथ फीमेल लीड निभाएँगी.

यह रोमांटिक-कॉमेडी, जो एक दिल को छू लेने वाला और मज़ेदार सिनेमैटिक अनुभव देने का वादा करती है, प्रदीप सिंह द्वारा लिखी गई है और जयेश प्रधान द्वारा निर्देशित की जाएगी. इसे इशान शिल्पी वर्मा, विशाल त्यागी और अनवर अली खान द्वारा क्यूरी स्टूडियो और शाइशा मोशन पिक्चर्स के सहयोग से प्रोड्यूस किया जा रहा है, और संगीत नेशनल अवॉर्ड विजेता महान इस्माइल दरबार द्वारा दिया जाएगा. फिल्म की अनोखी अवधारणा पर बात करते हुए रेमो डिसूज़ा ने कहा, 'एक

फिल्ममेकर के रूप में मेरी यात्रा में, मुझे हमेशा से ऐसी कहानियाँ पसंद रही हैं, जो वास्तविकता से जुड़ी हों, लेकिन उनमें एक खास चमक भी हो. 'टेढ़ी हैं पर मेरी हैं' बिल्कुल वही है, जो अपूर्णता को दर्शाती है.

मोहक मटकर को हुआ डांस का एक बेहद खास एहसास!

'सरू' में मुख्य किरदार निभा रहीं मोहक मटकर ने अपने रोल को लेकर अपने खास अनुभव साझा किए. मोहक कहती हैं कि ये सफर सिर्फ एक रोल निभाने का नहीं, बल्कि उनके लिए खुद को समझने, अपने किरदार से जुड़ने और अपनी संस्कृति के और करीब आने का एक खूबसूरत रास्ता रहा.

सेट से जुड़ी अपनी एक याद ताजा करते हुए उन्होंने एक खास डांस सीक्वेन्स की तैयारी के बारे में बताया, जिसने उन्हें अपने पुराने

दिनों में वापस पहुंचा दिया. क्लासिकल डांस में ट्रेनिंग होने के बावजूद उन्होंने पूरे उत्साह से कठपुतली, यानी एक लोकनृत्य शैली, सीखने का मौका अपनाया जो उनके लिए बिल्कुल नया था. मोहक बताती हैं कि यह सफर 'मुश्किल जरूर था, लेकिन बहुत सीख देने वाला' रहा. इस प्रक्रिया ने उन्हें न सिर्फ एक कलाकार के तौर पर मजबूत किया, बल्कि भारत की विविध सांस्कृतिक परंपराओं को और गहराई से समझने में मदद भी की. मोहक बताती हैं, 'मैं क्लासिकल डांसर हूं, लेकिन कठपुतली जैसा लोकनृत्य सीखना अपने आप में एक नया चैलेंज था.

गणेश कार्तिकेय का एपिसोड है खास : श्रेनु पारिख

अभिनेत्री श्रेनु पारिख का कहना है कि सोनी सब के शो 'गाथा शिव परिवार की - गणेश कार्तिकेय का आने वाला एपिसोड उनके लिये बेहद खास है. सोनी सब की पौराणिक गाथा, 'गाथा शिव परिवार की - गणेश कार्तिकेय', शिव परिवार - देवताओं के पहले परिवार की कम-ज्ञात कहानियों को जीवंत करती है. यह शो आध्यात्मिक भव्यता को कोमल पारिवारिक भावनाओं के साथ खूबसूरती से मिश्रित करता है, यह दिखाता है कि भगवान शिव, देवी पार्वती, भगवान गणेश और भगवान कार्तिकेय का दिव्य परिवार प्रेम, कर्तव्य और संघर्ष को कैसे संभालता है. आने वाले एपिसोड में दिव्य कहानी भगवान गणेश के भाग्य के एक महत्वपूर्ण मोड़, उनके विवाह की ओर बढ़ रही है. जब तुलसी (गीत जैन) भगवान गणेश से विवाह करने की इच्छा व्यक्त करती हैं, तो वह विनम्रतापूर्वक उनके प्रस्ताव को अस्वीकार कर देते हैं. उनके मना करने से आहत होकर, तुलसी उन्हें शाप देती हैं, यह घोषणा करते हुए कि भगवान गणेश दो बार विवाह करेंगे और दो पत्नियों से बंधे रहेंगे. यह शाप ही वह चिंगारी बन जाता है जो एक गहरे ब्रह्मांडीय सत्य को प्रकट करता है: यह वह समय है जब भगवान गणेश का भगवान ब्रह्मा (आरके दत्ता) की पुत्रियों, रिद्धि (नारायणी वर्णे) और सिद्धि (श्रेया पटेल) के साथ पवित्र मिलन होगा. जैसे ही पार्वती इस दिव्य बदलाव को महसूस करती हैं, वह भगवान गणेश से दो उज्ज्वल प्रकाश निकलते हुए देखती हैं, जो इस बात का संकेत है कि उनकी नियत दुल्हनें उनके जीवन में प्रवेश कर रही हैं. यह शक्तिशाली मोड़ भगवान गणेश की यात्रा के सबसे महत्वपूर्ण अध्यायों में से एक के लिए मंच तैयार करता है: रिद्धि और सिद्धि के साथ उनका शुभ विवाह, जो उनके दिव्य मार्ग में समृद्धि और ज्ञान लाएंगे.

कलर्स के 'मंगल लक्ष्मी' में फराह खान और दिलीप ने बढ़ाया पहले स्वाद चैलेंज का तड़का

अपनी चुटकियों और ट्रेडमार्क तड़के के साथ फिल्ममेकर फराह खान इंटरनेट फेवरेट दिलीप के साथ कलर्स के मंगल लक्ष्मी में एक स्पेशल एपिसोड के लिए पहुंचीं, जहाँ किचन डांस और अनोखे कुकिंग टास्क से जीवंत हो गया. चल रहे ट्रैक में 'पहला स्वाद' प्रतियोगिता अपने सबसे निर्णायक चरण में है टिकट-टू-फिनाले चैलेंज - जहाँ नई हेड शेफ भाभीजी (नीलू वागेला) मंगल और सौम्या को अप्रत्याशित कुकिंग टेस्ट में लगा देती हैं. जैसे ही फराह और दिलीप एक रोमांचक 'जोड़ी चैलेंज' पेश करते हैं, सौम्या आदित के साथ टीम बनाती है और मंगल को अकेले ही मुकाबला करना पड़ता है. अब, फिनाले साफ नजर आने के साथ सवाल यह है - क्या मंगल ऐसा डिश दे पाएगी जो न सिर्फ जजों के दिल जीत ले बल्कि प्रतियोगिता में उसकी जगह पक्की कर दे? कलर्स के मंगल लक्ष्मी के एक खास एपिसोड की शूटिंग के दौरान फराह खान ने कहा, 'अरे भाई, जब किचन का महायुद्ध हो रहा हो मंगल लक्ष्मी में, मुझे तो आना ही था! मैं सुपर एक्साइटेड हूँ 'पहला स्वाद' टिकट-टू-फिनाले चैलेंज जज करने के लिए यहाँ खाने का टेस्ट भी होगा और कंटेस्टेंट्स का पेशन्स भी. अपने फुल-ऑन फराह- तड़का के साथ, थोड़ी मस्ती, थोड़ा मसाला, और हमारे कुक दिलीप का जुड़ना किचन गारंटीड गरम होने वाला है. मंगल और सौम्या दोनों को मिलेंगे सरप्राइज और शॉक, लेकिन असली विनर का स्वाद कौन परोसेगा, वो तो आपको देखना होगा. बस इतना कहूँगी यह एपिसोड फ्लेवर, फन और फुल-ऑन फायरवर्क्स सर्व करता है.'

ऋतिक रोशन ने फिल्म 'धुरंधर' की तारीफ की

बॉलीवुड के हॉटस्टार ऋतिक रोशन ने हाल ही में रिलीज़ हुई फिल्म 'धुरंधर' की जमकर तारीफ की है. अपने इंस्टाग्राम स्टोरी पर ऋतिक ने लिखा कि उन्हें सिनेमा पसंद है और वे उन लोगों को पसंद करते हैं जो कहानी में पूरी तरह डूब जाते हैं और उसे अपने अभिनय से जीवंत बना देते हैं. उन्होंने कहा, 'धुरंधर इसका एक शानदार उदाहरण है.

मुझे इसकी कहानी कहने का तरीका बहुत पसंद आया. यही तो सिनेमा है.' ऋतिक ने आगे लिखा कि फिल्म के राजनीति वाले हिस्से से वे पूरी तरह सहमत नहीं हैं और इस पर बहस हो सकती है कि एक फिल्ममेकर के तौर पर हमारी क्या जिम्मेदारियां होती हैं. लेकिन एक सिनेमा के छात्र के रूप में उन्होंने कहा कि उन्होंने इससे बहुत कुछ सीखा और यह फिल्म वास्तव में कमाल की है. फिल्म 'धुरंधर' में रणवीर सिंह, अक्षय खन्ना, संजय दत्त, आर. माधवन और अर्जुन रामपाल मुख्य भूमिकाओं में हैं. इसे आदित्य धर ने लिखित, निर्देशित और निर्मित किया है, जबकि ज्योति देशपांडे और लोकेश धर इसके निर्माता हैं.

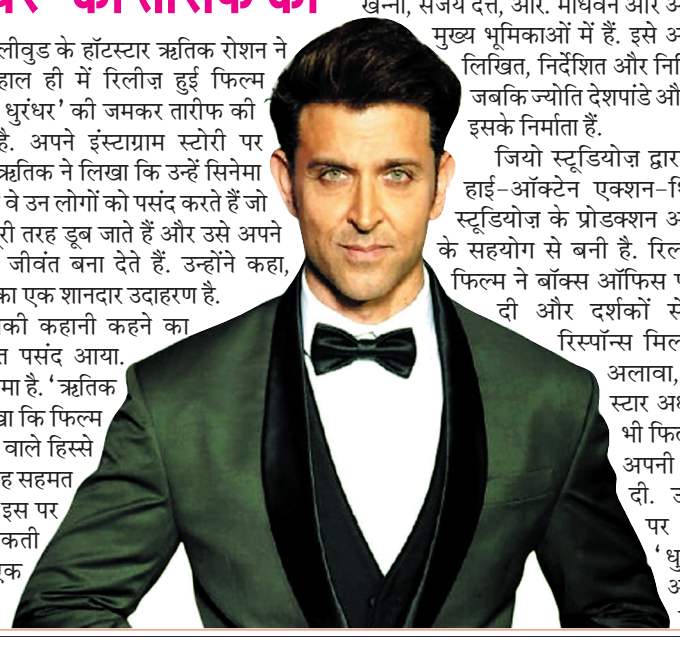

जियो स्टूडियोज़ द्वारा प्रस्तुत यह हाई-ऑक्टेन एक्शन-थ्रिलर बी62 स्टूडियोज़ के प्रोडक्शन और सारेगामा के सहयोग से बनी है. रिलीज़ के बाद फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर धूम मचा दी और दर्शकों से जबरदस्त रिस्पॉन्स मिला है. इसके अलावा, बॉलीवुड स्टार अक्षय कुमार ने भी फिल्म को लेकर अपनी प्रतिक्रिया दी. उन्होंने एक्स पर लिखा, 'धुरंधर देखी और मैं हैरान रह गया.

शाहरुख ने ऑस्कर रेस में शामिल 'होमबाउंड' की तारीफ

बॉलीवुड के किंग खान शाहरुख खान ने हाल ही में ऑस्कर 2026 के लिए भारत की आधिकारिक एंट्री चुनी गई फिल्म 'होमबाउंड' की खुले तौर पर तारीफ की है. शाहरुख ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर फिल्म के बारे में पोस्ट करते हुए कहा कि यह सिर्फ एक फिल्म नहीं है, बल्कि इंसानियत और संवेदनाओं की जीत है. उन्होंने फिल्म के निर्देशक नीरज घेवान के साथ-साथ पूरी कास्ट और प्रोडक्शन टीम को बधाई दी और कहा कि फिल्म ने दुनिया भर के दर्शकों का दिल जीत लिया है.

'होमबाउंड' की कहानी महामारी के समय दो दोस्तों की यात्रा पर आधारित है, जो अपने घर लौटने की कोशिश में अनेक चुनौतियों का सामना करते हैं. इस सफर के दौरान फिल्म जाति, धर्म और सामाजिक भेदभाव जैसे संवेदनशील मुद्दों को बेहद प्रभावी ढंग से दर्शाती है. फिल्म यह दिखाती है कि कठिन परिस्थितियों में भी इंसान के भीतर करुणा, सहानुभूति और इंसानियत कैसे जीवित रहती है. फिल्म में ईशान खट्टर, विशाल जेठवा और जाह्नवी कपूर मुख्य भूमिकाओं में हैं, जिनकी अदाकारी को आलोचकों और दर्शकों ने खासा सराहा है. शाहरुख खान ने अपने पोस्ट में लिखा कि ऐसी फिल्में ही समाज में सकारात्मक बदलाव लाती हैं और लोगों को सोचने पर मजबूर करती हैं. 'होमबाउंड' न सिर्फ भारत में बल्कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी लोगों के बीच चर्चा का विषय बनी हुई है. ऑस्कर 2026 में भारत की तरफ से इसे चुना जाना इस बात का प्रमाण है कि भारतीय सिनेमा अब वैश्विक स्तर पर कहानी, संवेदनशीलता और अभिनय के मामले में पूरी दुनिया में अपनी पहचान बना रहा है.